International Journal of Arts & Education Research

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एवं परम्परागत शिक्षा प्रणाली में अध्ययन बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की पर्यावरण अवबोध, पर्यावरणीय शिक्षा के संदर्भ में अभिवृत्ति तथा प्रशिक्षण आव-यकता का तुलनात्मक अध्ययन

शोधकर्त्री*[1]

[1]डां0 अल्का सिंह

प्रस्तावना

पर्यावरण एक व्यापक सम्प्रत्यय है। मनुश्य जिस प्राकृतिक, समाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक परिस्थितियों में रहता है, वह सब उसका पर्यावरण होता है, परन्तु पर्यावरणीय शिक्षा केवल उसके प्राकृतिक पर्यावरण की जानकारी तक सीमित रहती है, अतएव मुझे पर्यावरण के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों व जनसामान्य की पर्यावरण से सम्बन्धित सभी तथ्यों के अवबोध व पर्यावरण प्रशिक्षण का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

वर्तमान समय में ;ुद्ध पर्यावरण एक ज्वलंत समस्या है और पर्यावरण संरक्षण हमारा प्रथम कर्तव्य है और प्रदूशण को कम करना अगला चरण है, अतः इस प्रकार पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है। आज के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरणीय शिक्षा जन सामान्य के लिए आव-यक है जिससे उन्हें बढ़ते प्रदूशण से मानवीय विकास व भौतिक पर्यावरण के प्रभावित होने की जानकारी मिल सके। उनमें पर्यावरण के प्रति साकारात्मक व वैज्ञानिक दृश्टिकोण का विकास हो सके तथा उनकी चेतना, अभिरूचि व अभिवृत्ति विकसित हो सके। इसके साथ-साथ पर्यावरणीय शिक्षा इसलिए भी आव-यक है जिसमें युवाओं का औद्योगीकरण से जन्मा उपभोक्तावाद एवं उसके परिणाम स्वरूप प्रकृति के लगातार दोहन से उत्पन्न समस्याओं के प्रति जागरूक करके समाज का दायित्वपूर्ण सदस्य बनाया जा सके। इसी परिप्रेक्ष्य में मैंने अपना शोध कार्य किया है।

*Corresponding Author